शोध-सार

मेरे लघु शोध-प्रबंध का विषय है " 'आधा गांव' और 'उदास नस्लें' में प्रयुक्त गालियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन।" 'आधा गांव' राही मासूम रज़ा का प्रसिद्ध उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1966 ईस्वी में हुआ था। यह राही मासूम रज़ा का पहला उपन्यास है। इस उपन्यास में गाजीपुर जिले के गंगौली गांव के सैय्यद मुसलमानों की कथा है। इस उपन्यास के प्रकाशन के बाद ही हिंदी साहित्य जगत में हलचल पैदा हो गई, इसका कारण था इस उपन्यास के पात्रों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली गालियों का वर्णन। उपन्यास में वर्णित गालियों को लेकर यह उपन्यास काफी समय तक विवाद में घिरा रहा।

मेरे लघु शोध-प्रबंध का दूसरा उपन्यास है 'उदास नस्लें' यह पाकिस्तान के प्रसिद्ध लेखक अब्दुल्ला हुसैन का उर्दू भाषा में लिखित उपन्यास है। यह उपन्यास अब्दुल्ला हुसैन का पहला उपन्यास है जो पाकिस्तान में सन् 1963 ईस्वी में छपा था। यह उनका बहुचर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास के प्रकाशन के एक वर्ष बाद सन् 1964 में 'आदम जी' पुरस्कार प्राप्त हुआ। उपन्यास का कई भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है, इस उपन्यास में भी गालियों का प्रयोग किया गया है। कहीं-कहीं गालियां खुलकर सामने आती है तो कहीं-कहीं प्रछन्न रूप से या उनकी जगह डॉट डॉट डॉट(...) आता है अथवा लेखक (गाली देकर) लिख कर काम चला लेता है।

गालियों का अध्ययन वैसे तो समाजशास्त्र का विषय है परंतु साहित्य में इसका बहुत प्रयोग हुआ है। पहले के साहित्य में गालियों से परहेज किया जाता था। परंतु उस समय ऐसा नहीं था कि समाज में गालियों का प्रयोग नहीं होता था, बात यह है कि लेखक अपने साहित्य में गालियों के प्रयोग से बचते थे।

गाली का एक वर्ग चरित्र होता है। जो जिस वर्ग का आदमी है, गालियों का प्रकट उद्देश्य संबोधित व्यक्ति को अपमानित, आहत या उसके पौरुष को ललकारना होता है और कभी-कभी गालियां अभिव्यक्ति का सामान्य माध्यम भी होती हैं, साथ ही अप्रकट रूप से इसका उद्देश्य पुरुषत्व को सीमाबद्ध करना भी होता है।गालियां समाज का एक अभिन्न अंग बन चुकी है। हमारे समाज में इनकी पैठ काफी गहरी हो चुकी है परंतु इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि इसके बगैर भाषा की संजीदगी में कोई विशेष अंतर आएगा। मुंशी प्रेमचंद के तमाम उपन्यास बगैर अपशब्दों के साहित्य में विशेष स्थान रखते हैं। हां, गालियों से एक समाज-विशेष, आंचलिकता आदि की यथार्थता झलकती है।

गालियां शब्दों के अर्थ लोप, अर्थ विस्तार एवं सतत विकास की प्रक्रिया के कारण उत्पन्न हुई हैं। हमारे समाज में कई ऐसे शब्द प्रचलन में हैं, जिनका प्रयोग हम गाली के रूप में करते हैं जैसे कि एक शब्द है –'पाजी'। पाजी शब्द सल्तनत काल में भारत में प्रवेश करता है जोकि सर्वप्रथम सेना के लिए प्रयोग होता था। भारत में जब विदेशी आक्रांता आए तो इसी सेना के द्वारा भारतीयों का दमन, शोषण, लूट-मार आदि होने लगा। जो कि भारतीयों की दृष्टि से गलत था, और 'पाजी' शब्द भी गलत अर्थ के रूप में जाना जाने लगा और आज पाजी का सामान्य अर्थ 'बदमाश' ग्रहण किया जाता है।

गालियों के उद्भव के बारे में सटीक बता पाना बहुत मुश्किल कार्य है। इसका प्रयोग अनादिकाल से समाज में हो रहा है। समय-समय पर गालियों का अर्थ भी बदलता रहता है। कोई शब्द किसी भाषा, बोली का एक सामान्य शब्द रहता है तो दूसरी भाषा में गाली के रूप में प्रयोग होता है। गालियों का प्रयोग हमारे देश के धार्मिक ग्रंथों में भी मिलता है जैसे कि रामायण, महाभारत, रामचरितमानस आदि में। व्यक्ति के भावों को दर्शाने के लिए गाली एक सशक्त माध्यम है अतः रचनाकार कभी-कभी न चाहते हुए भी अपने रचना में अपशब्दों व गालियों का प्रयोग करता है। गालियां हमारे समाज में काफी अंदर तक पैठ बना ली हैं, शादी-विवाह, त्यौहार आदि में इनका प्रयोग होता है। हमें गालियों से परहेज करना चाहिए। मुंशी प्रेमचंद गालियों के प्रयोग को समाज में और साहित्य में गलत मानते हैं उनका मानना है कि समाज में अपशब्दों के प्रयोग से परहेज करना चाहिए और यह सत्य भी है क्योंकि किसी व्यक्ति की भाषा, बोली ही उस व्यक्ति का प्रथम परिचय देती हैं। गालियां हमारे समाज, भाषा, बोली आदि का अंग न ही एक दिन में बनी है, न ही एक दिन में हट सकती हैं। हमें इसे हटाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

गालियों के द्वारा मनुष्य किसी को अपमानित, तिरस्कृत व्यक्ति के पौरुष को ललकारता है। गालियों द्वारा एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति का जाति एवं लैंगिक उत्पीड़न भी करता है। गालियां अभिव्यक्ति का सामान्य मध्यम भी होती हैं। व्यक्ति जब ज्यादा परेशान होता है तो वह गालियों द्वारा अपना गुस्सा व्यक्त करके शांत हो जाता है। उसे कुछ समय के लिए सुकून मिल जाता है।

हमारे समाज में विवाह, त्यौहार आदि के दौरान गालियां गाई जाती हैं। इस लघु शोध-प्रबंध का उद्देश्य है साहित्य में गालियों के प्रभाव का अध्ययन करना। अतः इस लघु शोध-प्रबंध में समाज में एवं साहित्य में, गालियों के पड़ने वाले प्रभाव का कई दृष्टियों से अध्ययन करने की कोशिश की गई है।

यह लघु शोध-प्रबंध तीन अध्याय में विभक्त है और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन उप-अध्याय हैं। इसके प्रथम अध्याय में गालियों के उद्भव, गालियों की अवधारणा एवं गालियों के समाजशास्त्र का उल्लेख किया गया है। इस अध्याय में हिंदू धर्म-शास्त्रों एवं गालियों पर लिखे लेखों के आधार पर गालियों के उद्भव एवं विकास को समझने की कोशिश की गई है। द्वितीय अध्याय में 'आधा गांव' एवं 'उदास नस्लें' में प्रयुक्त गालियों का जाति, लिंग आदि आधार पर किस प्रकार से प्रयोग हुआ है। और एक वर्ग दूसरे वर्ग पर किस प्रकार जाति या लिंग के आधार पर गालियों का प्रयोग करता है, उसे समझने की कोशिश की गई है। तृतीय अध्याय में 'आधा गांव' एवं 'उदास नस्लें' में प्रयुक्त गालियों के समाजशास्त्र का अध्ययन किया गया है। गालियां किस प्रकार से अभिव्यक्ति का सामान्य माध्यम होती हैं, उनके द्वारा किस प्रकार आक्रोश व्यक्त किया जाता है एवं किस प्रकार गालियों द्वारा समाज में एक-दूसरे का उत्पीड़न किया जाता है, इसका उल्लेख किया गया है।

अंत में यह कहना गलत नहीं होगा कि हमारे समाज में गालियों का प्रयोग बहुलता से होता है जो कि हमारे समाज को कलंकित करता है। एक सभ्य और शिक्षित समाज में इस तरह के शब्दों का समान्य रूप से प्रयोग करने से बचना चाहिए और एक बेहतर समाज बनाना चाहिए।